बौद्ध कालीन शिक्षा (Education in Buddhist Period) →

भारत-वर्ष में 563 ई० पू० महात्मा बुद्ध का जन्म हुआ। महात्मा बुद्ध राजघराने से उत्पन्न होने पर भी सांसारिक राजवैभव का परित्याग करके परमार्थ के लिए तथा जनसाधारण के हितों के लिए कर्मक्षेत्र में कूद पड़े। बौद्ध धर्म द्वारा चलाई गई शिक्षा-प्रणाली को बौद्ध कालीन प्रणाली कहा जाता था।

बौद्धकाल में शिक्षा का पाठ्यक्रम →

(1) प्रारम्भिक (2) उच्च (3) औद्योगिक और व्यावसायिक वर्गों में बँटा हुआ था। प्रारम्भिक पाठ्यक्रम में साधारण पढ़ना-लिखना, गणित, पंचविद्या (शब्द विद्या, शिल्प विद्या, चिकित्सा विद्या, हेतु विद्या, अध्यात्म विद्या) थे। उच्च पाठ्यक्रम में सैद्धान्तिक एवं व्यावहारिक रूप प्रायः सभी विषय पढ़ाये जाते थे। धर्म, भाषा, इतिहास, भूगोल, ज्योतिष, राजनीति, न्याय, शिल्प, कला, प्रशासन आदि। छात्र किसी एक क्षेत्र में विशेषाध्ययन भी करता था। औद्योगिक पाठ्यक्रम में केवल कला-कौशल, व्यवसाय, उद्योग के विषय में रखे गये थे।

Scanned with CamScanner

शिक्षण विधि →

① **प्रवचन विधि →** गुरु अपनी इच्छानुसार विषय के ऊपर प्रवचन देता था। गुरु शुद्ध-उच्चारण एवं कंठस्थीकरण पर बल देता था।

② **प्रश्नोत्तर विधि →** व्याख्या में प्रश्नोत्तर प्रणाली का प्रयोग किया जाता था। शंका का समाधान, विषयों को समझने-समझाने, जिज्ञासा जाग्रत करने और मार्ग प्रदर्शन के लिए इस विधि का प्रयोग होता था।

③ **शास्त्रार्थ और वाद-विवाद की विधि →** सत्यों को सिद्ध करने के लिए वाद-विवाद या शास्त्रार्थ विधि काम में लायी जाती थी। वाद-विवाद करते समय आठ प्रमाणों का प्रयोग करते थे। ① सिद्धान्त ② हेतु ③ उदाहरण ④ साम्य ⑤ निरोध ⑥ प्रत्यक्ष ⑦ अनुमान ⑧ आगम।

④ **निदिध्यासन विधि →** धर्म एवं अध्यात्म के विषय के लिए यह विधि अपनायी जाती थी। इससे अन्तर्ज्ञान प्राप्त किया जाता था।

Scanned with CamScanner

(5) मॉनीटोरियल विधि → कक्षा के मेधावी छात्रों द्वारा या उच्च कक्षा के छात्रों द्वारा निम्न कक्षा के छात्रों को पढ़ाने का प्रबन्ध किया जाता था।

(6) सम्मेलन या परिषद् विधि → पूर्णिमा और प्रतिपदा के दिन संघ के सभी भिक्षु, अध्यापक, छात्र एक साथ मिलते थे और वहीं ज्ञान-धर्म की चर्चा होती थी।

(7) पुस्तक अध्ययन विधि → सम्यक् ज्ञान पुस्तक में रहता था। अत एव पुस्तक अध्ययन की विधि अपनायी गयी थी।

(8) देशाटन, भ्रमण, निरीक्षण विधि → ज्ञान प्राप्ति के लिए छात्र एक स्थान-स्थान पर जाते थे और वहाँ की चीजों का निरीक्षण करते थे।

(9) व्यावहारिक एवं प्रयोगिक विधि → व्यावसायिक एवं औद्योगिक विषयों का ज्ञान प्राप्ति के लिए कुशल कारीगरों के देख-रेख में छात्र रहता था और कुशलता एवं प्रवीणता अर्जन करता था। वह स्वयं काम करता था और अन्य लोगों को काम करते देखता भी था।

Scanned with CamScanner

बौद्ध कालीन शिक्षा में गुरु-शिष्य सम्बंध (Teacher Pupil Relationship in Buddist Education) →

गुरु का शिष्य के प्रति उत्तरदायित्व →

(1) शिष्यों के आवास एवं भोजन की व्यवस्था करना।
(2) शिष्यों के स्वास्थ्य की देखभाल करना, उनके अस्वस्थ होने पर उपचार की व्यवस्था करना।
(3) शिष्यों को पालि भाषा एवं बौद्ध धर्म का ज्ञान कराना।
(4) शिष्यों को उनकी योग्यता एवं क्षमतानुसार विशिष्ट ज्ञान कराना।
(5) शिष्यों के आचरण पर दृष्टि रखना एवं उनका चरित्र निर्माण करना।
(6) शिष्यों को निर्वाण की प्राप्ति का मार्ग दिखाना।

शिष्य का गुरु के प्रति कर्त्तव्य →

(1) गुरु के जागने से पहले शैय्या त्यागना, गुरु के लिए दातुन व स्नान की व्यवस्था करना।
(2) मठ एवं विहार निवासियों के लिए गुरु के साथ भिक्षा माँगने जाना।
(3) गुरु के आचरण पर दृष्टि रखना, उनके भूल करने पर संघ को सूचित करना।

Scanned with CamScanner